

दग्ध-कर्म

हम जन्म से लेकर मरने तक हर रोज कई कर्म करते रहते हैं। लेकिन हमें नहीं पता: कर्म का मतलब क्या है? किस्मत से परे पहुंचने के लिए कर्म कैसे करें? हम फंसे हुए इस पाप-पुण्य की चक्र से बाहर आकर हमारे कर्मों को कैसे दग्ध करें? आनंदमय जीवन कैसे जिए? इनके बारे में स्पष्ट समझ ना होने के कारण, हर रोज हम इच्छानुसार कर्म करते हुए, वांछित परिणामों को हासिल नहीं करे तो: यह कर्म है, किस्मत है कहकर जी रहे हैं। अब मैं आपको समझाऊंगा कि मैंने इनके बारे में अनुभव पूर्वक क्या जाना है।

हर एक आत्मा में ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर तत्व होते हैं। लेकिन जीवात्मा अर्थात् हम इस विषय को भूलकर अधूरा जीवन जी रहे हैं। जैसे एक कण में इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन एक साथ रहते हैं, उसी तरह से हर कर्म में: सृजन करना-संचालन करना-विनाश करना, वे तीनों एक साथ समान तुलना में रहते हैं। इस विश्व में हर कण इन तीन स्थितियों से ही भरा हुआ है। इसे हम अच्छा-बुरा-तटस्थ, या तमो-रजो-सत्व गुण भी कह सकते हैं। ब्रह्म सत्व गुण के, विष्णु रजोगुण के, महेश्वर तमोगुण के अधिपति हैं। इसलिए इन तीनों को एक साथ मिलकर काम करने से ही मानव जीवन संपूर्ण होगा।

ब्रह्मा का कर्तव्य - कर्मों का सृजन करना। उदाहरण के लिए मुझे डांटने का विचार आया, यह मेरे आंतरिक ब्रह्मा द्वारा सृजन की गई है। इसी तरह से कर्म का संचालन विष्णु का कर्तव्य है, अर्थात् उस डांट के लिए आवश्यक शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करते हुए उसे आगे बढ़ाता है। और उस कर्म को नष्ट करना या दग्ध करना, महेश्वर का कर्तव्य है।

लेकिन यदि आप विचार आने के तुरंत ही कर्म करेंगे तो यह कर्म आपके मन में संग्रहित हो जाता है। किसी भी कर्म करने से, कुछ लोगों को अच्छा होता है और कुछ लोगो को बुरा होता है। उदाहरण के लिए आप शाकाहार को समर्थन करते हुए, मांसाहारी को नफरत करे तो - आपको शाकाहारी के प्रति पसंद की भावना और मांसाहारी के प्रति नफरत की भावना होता है। इसकी वजह से आप कुछ लोगों के दुश्मन और कुछ लोगों के दोस्त बन रहे हैं। अर्थात् एक ही समय में अच्छे-बुरे कर्म करते हुए, उनके संबंधित उचित परिणामों को प्राप्त करते हुए, उनमें ही हम फस रहे हैं।

इसके लिए समाधान: ज्ञानाग्नि को उत्पन्न करके, उसमें पिछले सारे कर्मों को दग्ध करना। ऐसा करने के लिए आपको शिव तत्व को भी उपयोग करना होगा। लेकिन आप अपने जीवन में सिर्फ ब्रह्मा और विष्णु के तत्वों का उपयोग कर रहे हैं, आप महेश्वर तत्व का उपयोग नहीं कर रहे हैं। अर्थात् आप सिर्फ सृजन करने और संचालन करने की ओर ही अपना ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। लेकिन सृजन की गई चीजों को कैसे नष्ट करना, उनके बारे में आप बिल्कुल नहीं सोच रहे हैं।

शिव किसी एक कार्य या कर्म का समय पूरा होते ही उसे नष्ट कर देता है। शिव विनाशकारी तत्व के अधिपति की तरह रहते हुए उस पात्र को निभाते हैं। डिलीट ऑप्शन या

शिव तत्व हमारे लिए अत्यावश्यक है, क्योंकि जो भी पैदा हुआ है, उसका नाश अनिवार्य होता है, यह सृष्टि का नियम है। लेकिन अज्ञान में आप अनजाने से ही शिव तत्व को नफरत कर रहे हैं। अब से आप इसे उपयोग करना आरंभ कीजिए। हमारे अंदर डिलीट ऑप्शन है। अर्थात् आपको यह जानना होगा कि हमारे अंदर ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर तत्व होते हैं।

यदि आप स्वच्छ बनना चाहते हैं तो निश्चित रूप से आपको पता होना चाहिए कि डिलीट ऑप्शन का उपयोग कैसे करें। अगर किसी को डांटने की विचार आती है तो - तुरंत ही बाहर ना डांटते हुए अंदर, मैं डांटता हूँ, प्रशंसा करता हूँ, न्यूट्रल कहकर तीनों को चुनिए। अर्थात् ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर का चयन कीजिए। और उस विचार से कहिए की तीनों मिलकर एकजुट रहने की स्थिति को पहुंचने के बाद ही मैं डांटता हूँ। शांतिपूर्ण स्थिति को पहुंचने के बाद, जो भी आप महसूस करते हैं उसे कीजिए।

यदि आप हर रोज इस तरह अभ्यास करेंगे तो निश्चित रूप से कई विचार आने पर भी आप विचलित ना होने की स्थिति को पहुंचेंगे। जब आप राग-द्वेष से परे पहुंचकर कर्म करेंगे अर्थात् सूत्रधार की तरह रहते हुए पात्र को निभाएंगे तो आपके सारे कर्म दग्ध-कर्म हो जाते हैं।

मेरे क्लास में, मैं सबको डांटता रहता हूँ और सबको प्रशंसा भी करता हूँ। सभी तरह के शब्दों का प्रयोग करता हूँ। मेरे क्लास में सभी प्रकार के लोग होते हैं। रोगियों, डॉक्टरों, वैज्ञानिकों, शिक्षकों..... सभी मेरे शब्दों को हल्के से और खुशी से स्वीकार करते हैं। आमतौर पर हम किसी को डांटते हैं तो क्या वे चुप रहेंगे? नहीं। लेकिन मैं डांटने से भी लोग इसे खुशी से और हल्के से स्वीकार कर रहे हैं, क्योंकि मैं स्वच्छ स्थिति में रहकर कर्म करता हूँ। ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर मिलकर एकजुट रहने वाली स्थिति में रहकर उन्हें मैं डांटता हूँ। मेरे डांट या प्रशंसा, ब्रह्मा द्वारा सृजन किया जाता है, उसी वक्त इसे विष्णु द्वारा संचालित किया जाता है और साथ ही शिव द्वारा नाश किया जाता है। इन्हें दग्ध-कर्म कहते हैं।

अर्थात् मेरे मेमोरी कार्ड में दग्ध-कर्म के संबंधित कुछ भी स्टोर नहीं होगा। अगर मैं इस स्थिति में रहते हुए कर्म नहीं करूंगा तो वे अंदर स्टोर हो जाते हैं। इसे मैं पहचानकर, उन सारे कर्मों को शांतिपूर्ण और दिव्य से देखने की स्थिति को पहुंचने तक, बार-बार उनको याद करके अनुभव करते हुए दग्ध करता हूँ। हमारे द्वारा की गई कर्म, अंदर डिलीट ना होने की वजह से ही हमें बाहर उनके संबंधित कर्म रिपीट होता है। इसे डिलीट करने के बाद ही समस्या गायब होता है। डिलीट करने के बारे में अधिक जानकारी के लिए “आंतरिक यात्रा” टॉपिक पढ़िए।

योगी भी कर्म करते हैं लेकिन इनसे चिपक कर नहीं रहते। कर्मों से परे रहने की वजह से, कोई भी कर्म उन्हें स्पर्श नहीं करता। वे कमल के पत्ते पर पानी की बूंद की तरह रहते हैं। अर्थात् कुछ भी उनके मेमोरी कार्ड में स्टोर नहीं होगा। लेकिन आप कर्म करते ही यह तुरंत आपकी मेमोरी कार्ड में जमा हो रहा है।

उदाहरण के लिए आप अपने मोबाइल की मेमोरी कार्ड में कई गाने स्टोर करते हैं ना। अगर हम नए गाने स्टोर करना चाहते हैं तो उसमें खाली जगह होनी चाहिए। वरना हमें पुराने गानों को डिलीट करना होगा। उसी तरह हमारे मन भी मेमोरी कार्ड की तरह है। उसमें जमा

हुए अनावश्यक चीजों को डिलीट करना होगा, मैं इसे दग्ध करना या ज्ञानाग्नि को उत्पन्न करना कह रहा हूँ।

बाहर मोबाइल में उपलब्ध मेमोरी कार्ड का उदाहरण ले सकते हैं, लेकिन आध्यात्मिक रूप से हमें जानना होगा कि पिछले कर्मों को डिलीट कैसा करना है। यदि आप कुछ सृजन करते हैं, तो उसे आपको ही संचालन करना होगा और बाद में आपको स्वयं नाश करना होगा। यदि आप सृजन नहीं करते हैं तो नष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं है। मतलब आप परमात्मा स्थिति में रहते हुए कर्म करे तो अर्थात् त्रिमूर्ति एकजुट होने के बाद कर्म करे तो वह कहीं भी स्टोर नहीं होगा।

कर्म करने से भी अंदर स्टोर ना होने के लिए हमें क्या करना चाहिए? अर्थात् हमें सारे गानों को सुनना है, लेकिन मेमोरी कार्ड में स्टोर नहीं होना चाहिए, इसके लिए हमें क्या करना है? यदि हमारे पास 24 घंटे इंटरनेट कनेक्शन रहना काफी है। जब भी हमें लगेगा कि गाना सुनना है, तब हम गाने सुन सकते हैं, लेकिन वो मेमोरी कार्ड में स्टोर नहीं होगा। इसे मैं कहता हूँ - कर्म करने से भी, उससे चिपक कर ना रहना या दग्ध-कर्म।

इस ब्रह्मांड में हर जगह परमात्मा व्यापित है। हम कहीं भी, कभी भी उसके साथ कनेक्शन रख सकते हैं, जैसे हम वाई-फाई के साथ कनेक्शन रखते हैं। इसलिए हमेशा आपको उसके साथ कनेक्शन रखकर, कर्म करना होगा। अर्थात् परमात्मा के साथ रहते हुए कोई भी कर्म करने से, या सूत्रधार की तरह रहते हुए आप कोई भी पात्र निभाने से, वे दग्ध-कर्म हो जाते हैं। अर्थात् परमात्मा की शक्ति स्वच्छ रूप का धारण करता है, कुछ समय रहता है, काम पूरा होने के तुरंत ही यह स्वच्छ होकर, परमात्मा में पुनः विलीन हो जाता है। बीच में कहीं भी स्टोर नहीं होगा। इस तरह करने से आपके सारे समस्याएं गायब हो जाते हैं। इस साधना को आप करके देखिए, आपको ही फर्क समझ में आएगा।

दग्ध-कर्म करने से परिणाम आएगा, मेरा यह कहना सुनकर, कई लोग परिणामों की अपेक्षा करते हुए यह साधना कर रहे हैं। इसी कारण से उन्हें परिणाम नहीं मिल रहा है। इसलिए जब भी आप अपेक्षा करते हैं, तब तुरंत उसे पहचानकर ऐसा कहिए: मैं कुछ भी अपेक्षा ना करते हुए साधना जारी रखूंगा, या सभी प्रकार के परिणामों का अपेक्षा करता हूँ, या इस साधना करने से कौनसा परिणाम आएगा मुझे पता नहीं है, वह रहस्यमय है। इसके बाद साधना को जारी रखते हुए क्या होगा प्रतीक्षा करके देखिए।

यदि सृष्टि-संचालन-संहार एक साथ हो जाते तो उन्हें दग्ध-कर्म कहते हैं। दग्ध-कर्म कभी भी वापस आपके पास नहीं आएगा। क्योंकि वे आपमें स्टोर नहीं हुआ है। अगर उस कर्म के परिणाम वापस आने पर भी, वह आप पर प्रभाव नहीं दिखाई देगा, क्योंकि आप स्वच्छ रहते हैं।

दग्ध-कर्म की साधना करने से, आप अद्भुत परिणामों को हासिल कर सकते हैं। तब तक यह असाध्य लगने पर आप कर्मा-भाग्य मान रहे थे, उन सारे कर्मों को दग्ध करने से समाधान प्राप्त होगा। क्योंकि शिव भी आपके साथ शामिल है। मानिए कि आपको सभी समस्याओं का

समाधान प्राप्त हुआ तो, क्या तब भी आप, कर्मा या किस्मत या भाग्य कहेंगे? आप ऐसा नहीं कहेंगे।

जब आपके सारे कर्म दग्ध हो जाएंगे, तब आप स्वच्छ और एक छोटी बच्ची की तरह परिवर्तित होकर, कूदना शुरू कर देंगे। जब आपके वर्तमान समस्याएं क्लियर हो जाते हैं, तब आपके द्वारा निर्भाई पिछले पात्र इसे पहचानते हैं। हां, मैं सिर्फ ब्रह्मा-विष्णु को उपयोग किया, लेकिन शिव को उपयोग नहीं किया, इस तरह एहसास करने से, वे स्वयं ही अपने कर्मों को दग्ध कर देंगे। संग्रहित हुई पुराने कर्म भी इस ज्ञान की झलक से दग्ध हो जाते हैं। ऐसा करने से आप पूरी तरह से इस कर्म-चक्र से बाहर आकर, मुक्ति प्राप्त करके, स्वच्छ स्थिति में रहते हुए अपने जीवन को आनंद से, खुशी से बिताएंगे।

इसलिए अब से आप कर्मों को दग्ध कीजिए। इस तरह साधना को जारी रखने से आप स्वच्छ स्थिति को पहुंचकर, स्वच्छ शक्ति का उपयोग करके, आप आनंद पूर्वक जीवन बिता सकते हैं। इसकी वजह से आप फंसे हुए पाप-पुण्य कर्म चक्र से मुक्ति पाकर, बाहर परिस्थिति किस तरह होने से भी, आप उनसे चिपक कर ना रहते हुए, अंदर शांतिपूर्ण रहेंगे।

** यह ज्ञान तेलुगु भाषा से अनुवादित है। तेलुगु या अन्य भाषाओं में यह ज्ञान पढ़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें <http://darmam.com/library.html>